International Journal of Applied Research 2015; 1(4): 344-346

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 3.4
IJAR 2015; 1(4): 344-346
www.allresearchjournal.com
Received: 27-02-2015
Accepted: 30-03-2015

डॉ0 शिवदत्त शर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ढलियारा कांगड़ा हिमाचल प्रदेश ।

Correspondence:
डॉ0 शिवदत्त शर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ढलियारा कांगड़ा हिमाचल प्रदेश ।

भारतीय संस्कृति में देवी पूजा का महत्त्व

डॉ0 शिवदत्त शर्मा

इतिहास साक्षी है कि जब जब धर्म की हानी एवं अधर्म का बोलबाला होने लगा तब तब किसी अलौकिक शक्ति का प्रादुर्भाव जगत में होता रहा है। अधर्म के शक्तिशाली होने की बात आधुनिक नहीं है अपितु समय पर अनेक ऐसे उद्धरण इतिहास पुराण में मिलते हैं जो यह प्रमाणित करते हैं कि धर्म – अधर्म सत्य – असत्य जैसे युग्म सदा ही विद्यमान रहे हैं।
भगवती दुर्गा, जगत् धारिणी मां के विषय में अनेक पुराणों में कई तरह से अनेक कथाएं प्रचलित है। कार्तिक मास के नवरात्रों में भगवती दुर्गा की आराधना का विशेष महत्व शास्त्रों में प्रतिपादित है। मां भगवती की इस मास में उपासना करने से मनुष्य सभी बाधाओं से विमुक्त हो जाता है तथा धन – धान्य इत्यादि अनेक सम्पदाओं से स्मृद्ध हो जाता है।

सर्वा वाधा विनिर्मुक्तो धन धान्य सुतान्वितः। [1]
मनुष्यः मत् प्रसादेन, भविष्यति न संशयः ।।

देवी भागवत शास्त्रों में उल्लेख है कि देवताओं और राक्षसों में प्राचीन काल में भंयकर संग्राम हुआ । इसमें देवताओं का अधिपति महाषासुर अत्यन्त ताकतबर था । दैत्यों ने देवताओं की सेना को परास्त का दिया। महिषासुर इन्द्र की पदवी पर विराजमान हो गया। उस समय देवता लोग परास्त होकर व्रहमा जी के पास पहुँचे, सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाया तथा आश्चर्य व्यक्त किया कि सूर्य ,इन्द्र,अनिल,चन्द्र यम आदि सभी महिषासुर के प्रभाव में हैं तथा अन्य देवताओं को उसने स्वर्ग से निकाल दिया है। [2]
देवताओं की प्रार्थना सुन कर भगवान शंकर को अत्यन्त क्रोध हुआ, व्रहमा [3] के मुख से भी अत्यन्त तीक्ष्ण तेज प्रकट हुआ। अन्य अनेक देवताओं का भी एक तेज पुंज निकला तथा
सम्मिलित रुप में इस तेज ने एक रुप को धारण कर लिया। उस समय सभी देवताओं ने जलते हुए पर्वत के समान उस महान तेज को देखा और अपनी कान्ति से वह एक नारी के रुप में प्रकट हुआ। शंकर भगवान के तेज से मुख एवं यम की शक्ति से केश विष्णु के तेज से, भुजाएं , चन्द्र से स्तन इत्यादि भिन्न भिन्न अंगों का निर्माण हुआ। [4] उस अद्भुतःतेज से निर्मित यह स्बरुप एक अत्यन्त पराक्रमी , कल्याण कारी था । नारी के स्वरुप में इस तरह महान् शक्ति स्वरुप देह को देखकर देवतागण अत्यन्त प्रसन्न हुए। दंवी की गर्जना से समस्त दिशाएं और सागर कांपने लगे। [5] देवता भी आश्वस्थ होकर सिंह वाहिनी देवी भगवती की जय जयकार करने लगे । उसी समय महिषासुर देवी की आलौकिक शक्ति का सामना करने के लिए क्रोधित होकर दौड़ा। देवों असुरों के मध्य भयानक युद्ध होने लगा। देवी भगवती का वाहन शेर भी उन राक्षसों पर दस प्रकार झपटता जैसे जगंल में आग सब कुछ निगल लेती है। देवी अलौकिक शक्ति थी , उनके निश्वासों से निरन्तर अनेक गणों का निर्माण हो रहा था। महिषासुर को अन्ततः मारने के उपरान्त देवताओं ने देवी पर पुष्प वृष्टि की। राक्षसों के संहार के बाद देवताओं ने देवी की स्तुति में गुणगान किया।इस तरह का वर्णन श्री दुर्गा सप्तशती मे बड़े विस्तार से तेरह अध्यायों में वर्णित है–

शक्रादयः सुरगणाः निहते अति वीर्ये। [6]
तस्मिन दुरात्मनि स्वरारि वलये च देव्याः।
तां तुष्टुवुः प्रणति नम्र शिरो धरांसा
वाग्भिः प्रहर्ष पुलको दम्य चारु देहाः।।

तथा च – **दुर्गेस्मृता हरसि भीतिं अशेष जन्तोः ; [7]**
स्वस्थैः स्मृता मति मतीव शुभां ददासि।
दारिद्रय दुखभय हारिणी , का त्वदन्या,
सर्वोपकार करणाय , सदार्द्र चित्ता ।।

अर्थात् हे देवी ! तुम्हारा स्वभाव दुराचार को शांत करने वाला है। इस की तुलना नहीं की जा सकती , आप तो शत्रु ओं पर भी दया करने वाली हो।
देवताओं की स्तुति से देवी भगवती प्रसन्न हो गईं तथा देवी दुर्गा ने देवताओं से वर मांगने को कहा , देवताओं ने अत्यन्त प्रसन्न हो कर माँ दुर्गा से प्रार्थना की कि जब जब आप का स्मरण किया जाए तब आप प्रत्येक आपत्ति , बाधाओं को दूर कर देने की कृपा करना । मां भगवती ने प्रसन्न हो कर देवताओं को वरदान दिया कि वह स्मरण करने पर अनेक आपत्तियों , वाधाओं से भक्तों को मुक्त करेगी , यह कह कर देवी अन्तर्धान हो गई ।
उसके पश्चाद् वही देवी पार्वती के रुप मे शुंभ – निशुंभ, रक्तबीज और चन्द्रमुण्ड आदि का संहार करने के लिए देवताओं द्वारा स्तुति करने पर प्रकट हुई । यद्यपि दुर्गा मां भगवती का नाम दुर्ग नामक राक्षस विशेष का संहार करने के कारण पड़ा , परन्तु दुर्गा अनेक रुपा देवी है।

तत्रैप च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम्। [8]
दुर्गा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।।

आदिशक्ति के नाम से भी मां भगवती की आराधना की जाती है। आदि शक्ति के तीन प्रमुख रुप है– सरस्वती , लक्ष्मी तथा काली जो क्रमशः व्रहमा, विष्णु महेश की संगिनी के रुप में प्रसिद्ध है। मां काली का ही एक रुप दुर्गा हैं वस्तुतः काली का मूल रुप यही है। घटना क्रम से इसी ने विभिन्न नाम रुप धारण किए हैं । ये सभी नाम काली अथवा दुर्गा के पर्याय हैं । किसी भी रुप का , अथवा किसी भी नाम की देवी का स्मरण किया जाए , दुर्गा मां की कृपा हो जाती है यह एक अद्भुत सत्य है।
मां भगवती दुर्गा जी के नौ अवतार विशेष रुप से पूजित होते है, नवरात्र काल मे इनकी उपासना क्रमिक रुप से प्रतिदिन एक नए अवतार की की जाती है –
दुर्गा के नव अवतार इस प्रकार हैं

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं व्रहमचारिणीं।
तृतीय चन्द्रधण्टेति कुष्माण्डेति चतुर्थकम्।
पंचमं स्कन्द मातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
सप्तम् कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्।
नवमं सिद्धिदात्री च नव दुर्गाः प्रकीतिर्ताः।।

अर्थात – 1 शैल पुत्री 2 व्रहमचारिणी 3 चन्द्रघण्टा 4 कुष्माण्डा 5 स्कन्द माता 6 कात्यायनी 7 कालरात्री 8 महागौरी 9 सिद्धिदात्री।
इसी प्रकार दुर्गा जी के वत्तीस नाम रुपों का एक क्रम और भी मिलता हैं जिनमें प्रत्येक प्रथम शव्द से प्रारम्भ होता है।
इस तरह यह आदि शक्ति स्वरुप देवी यद्यपि कहीं भी आराध्य हैं परन्तु कुछ प्रमुख स्थानों को पवित्रता और महिमा की दृष्टि से विशेषतः स्थान प्राप्त है। उन्हें शक्ति पीठ भी कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि यादि शक्ति पीठ में जाकर देवी पूजा की जाए तो विशेष फल प्राप्त होता है। सभी शक्ति पीठ एक ही देवी सती अर्थात् शिव की पत्नी से सम्बन्धित हैं अतः कहीं भी दर्शन पूजन किया जाए, अभीष्ट की पूर्ती अवश्य होती है। सरस्वती , लक्ष्मी अथवा काली (दुर्गा) , किसी रुप का भी ध्यान किसी भी शक्ति पीठ पर किया जा सकता है।
शक्ति पीठों के विषय मे पौराणिक सन्दर्भो से अनेक कथाएं प्रायः एक जैसी मिलती हैं। ऐसा उल्लेख है कि राजादक्ष मे एक बार यज्ञ समारोह किया जिसमें दम्भ वश व्रहमा विष्णु महेश को नहीं बुलाया । दक्ष की कन्या पार्वती शिवजी की पत्नी थी उन्होनें अपने पिता के घर इतने बड़े अनुष्ठान में पहुँचने का अनुरोध किया , परन्तु शिवजी ने पार्वती को समझाया कि बिना बुलाए कहीं भी जाना उचित नहीं पर पार्वती के बार बार अनुरोध पर उसे आज्ञा मिल गई। पिता के घर पहुँचने पर पार्वती जी को वह सम्मान न मिला। जिसकी अपेक्षा थी , अन्य देवताओं को सम्मान्ति होते देखकर और अपने पति का निरादर देख कर पार्वती ने अपने आप को यज्ञ कुण्ड में फैंक दिया । शिवजी को इस घटना का विवरण मिला, वे वीर भद्र सहित वहां पहुँचे । चारों और उन्माद भरा वातावरण शिवजी को भी प्रभावित किए बिना न रहा और शिवजी मतिभ्रष्ट से होकर रह गए उन्होने पार्वती के विदग्ध शरीर को निकाला तथा ताण्डव नृत्य करने लगे , धीरे धीरे उनका नृत्य इस तरह तीव्र हो गया कि धरती अम्बर डोलने लगे। भगपान विष्णु ने समझ लिया कि जब तक यह शरीर सामने रहेगा शिवजी तांडव नृत्य करते रहेगें उन्होनें अपने चक्र से शव को काट दिया। शव को लिए तीव्र गति से शिवजी नृत्य कर रहे थे परिणाम स्वरुप गति एवं परिणाम के अनुसार पार्वती जी के विदग्ध शरीर के भिन्न भिन्न अंग दूर दूर जाकर गिरे। जहां जहां वे अंग गिरे उन्हें शक्ति– पीठों की संज्ञा दी गई जहां माँ भगवती दुर्गा की आराधना करने का विशेष महत्त्व पुराणों में प्रति पादित है, मुख्य शक्ति पीठ 51 माने गए हैं मार्कण्डेय पुराण के अन्तर्गत दुर्गा पाठ का कार्तिक मास के नवरात्रों का अपना विशेष महत्व है। इन नवरोत्रों मे दुर्गा सप्तशती का पाठ विशेषतः प्रचलित है, परन्तु यह अशुद्धि के भय के कारण सभी के लिए सुगम नहीं है। देवी का अगर शुद्ध स्वरुप से आराधन हो तो माँ दुर्गा आशु फल दात्री मानी जाती है। दक्षिण में उत्तर की अपेक्षा मां दुर्गा की आराधना का अधिक प्रभाव है, सम्भव है अधिकांश शक्ति पीठ दक्षिण में ही होने के कारण जन –साधारण की उपासना का केन्द्र मां दुर्गा बन गईं। माँ दुर्गा आधुनिक सन्दर्भ में पाप एवं पापियों के विरुद्ध एक मानसिक शक्ति का भी प्रतीक हैं वह पाप एवं पापियों के विरुद्ध लोहा लेने की शक्ति प्रदान करती है। मां दुर्गा स्मृद्धि की प्रतीक हैं जो भविष्य को सुखकारी एवं स्मृद्ध बनाने का आशीष देती हैं । यह दुर्व्यवहार को मनुष्य के अन्दर नहीं आने देती यह मां दुर्गा बैरियों पर भी दया करने वाली है भक्तों के लिए तो वह साक्षात् माता के सदृश ळें

दुर्वृत्त वृत्त शमनं तव देवी शीलम् , [9]
रुपं तथैतद् आविचिन्त्य मतुल्यमन्यैः।
वीर्यं च हन्तृ, हृत देव पराक्रमानाम् ,
वैरीषु अपि प्रकटितैव दया त्वमेत्थम् ।।

अपिच–

देव्या मया ततमिदं जगदात्म शक्तया; [10]
निशेष देव गण शक्ति समूह मूर्त्या।
तामाम्विकामाखिल देव महर्षि पूज्यां ,
भक्तया नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ।।

अर्थात– जिन भगवती ने अपनी शक्ति से इस सम्पूर्ण जगत को विस्तारित किया है और जो सम्पूर्ण देव गणों की शक्ति समूह की मूर्ति है, और जो सम्पूर्ण देव गणों और महर्षियों से पूजन के योग्य है ऐसी उस अम्विका माँ भगवती दुर्गा को हम सब भक्ति पूर्वक प्रणाम करते है वह हमारा कल्याण करें।
संस्कृत लौकिक साहित्य में कई ग्रन्थों में देवी के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है। कवि कालिदास –शिव एवं दुर्गा के उपासक माने जाते हैं, अनेक ग्रन्थ दुर्गा की आराधना में लिखित हैं। देवी भागवत् के अतिरिक्त पुराणों में देवी का महत्त्व प्रतिपादित ही है। संस्कृत साहित्य में प्रायः सर्वत्र वर्णन मिलता है।
भारत के प्रायः सभी भू– भागों मे देवी की आराधना होती है। कदाचित यह परम्परा दक्षिण में अधिक है। हिन्दी साहित्य में सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला द्वारा ' **राम की शक्ति पूजा** , [11] इसी के महत्व को प्रति पादित करती है। श्री राम द्वारा दुर्गा की उपासना परोक्ष रुप में निराला की भावना को भी अभिव्यक्त करती है। देवी के अनेक रुप है, प्रायः सभी रुपों का वर्णन समाज एवं साहित्य में

दिखाई देता है। पश्चिमी बंगाल की तो अधिष्ठात्री देवी मां भगवती ही को ही माना जाता है। पश्चिमी बंगाल में शायद ही कोई ऐसा घर होगा जहां देवी की आराधना मुक्त कण्ठ से नही की जाती है। अधिकतर लोगों को देवी महात्म्य एवं दुर्गा सप्तशती` आदि से अन्त तक कण्ठस्थ है । दुर्गा सप्तशती के एक स्त्रोत में दुर्गा के 108 नामों का उल्लेख है। शापोद्धार करने के उपरान्त कवच , अर्गला, कीलकम् एवं अंग न्यास तथा नवार्ण मन्त्र जाप एवं न्यास के बाद रात्री सूक्त एवं सप्तशती न्यास एवं ध्यान के उपरान्त दुर्गा पाठ प्रारम्भ करने की परम्परा है इसमें थोड़ा बहुत क्रम परिवर्तन भिन्न भिन्न स्थानों में सम्भव है । मूलतः देवी उपासना का विस्तृत उल्लेख देवी भागवत में भी उपलब्ध है। हिमाचल प्रदेश में भी नवरात्रों में देवी की आराधना विशेषतः प्रचलित है। श्रावण अष्टमी एवं शरद् नवरात्रों में देश विदेश से अनेक श्रद्धालु हिमाचल प्रदेश में बडें उत्साह से मां भगवती के दर्शन करने आते है।

संदर्भ सूची

1. श्री दुर्गा सप्तशती – प्रथम अध्याय – श्लोक संख्या –6
2. श्री दुर्गा सप्तशती – प्रथम अध्याय – श्लोक संख्या –9
3. श्री दुर्गा सप्तशती – प्रथम अध्याय – श्लोक संख्या –10,11
4. श्री दुर्गा सप्तशती – प्रथम अध्याय – श्लोक संख्या –14,15
5. श्री दुर्गा सप्तशती – प्रथम अध्याय – श्लोक संख्या –30,32
6. श्री दुर्गा सप्तशती – चतुर्थ अध्याय – श्लोक संख्या –02
7. श्री दुर्गा सप्तशती – चतुर्थ अध्याय – श्लोक संख्या –17
8. श्री दुर्गा सप्तशती –एकादश अध्याय –श्लोक संख्या –49–50
9. श्री दुर्गा सप्तशती – चतुर्थ अध्याय – श्लोक संख्या –21
10. श्री दुर्गा सप्तशती – चतुर्थ अध्याय – श्लोक संख्या –3
11. राम की शक्ति पूजा – सूर्य कान्त त्रिपाठी निराला